International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2026; 3(5): 08-11
© 2026 IJMH
www.themultijournal.com

Received: 17-08-2026
Accepted: 31-08-2026
Publish : 03-09-2026

डा. सुमित्रा देवी
विद्यालय शिक्षा विभाग,
हरियाणा

Correspondence:
डा. सुमित्रा देवी
विद्यालय शिक्षा विभाग,
हरियाणा

वीवीबीआईएसएण्डआईएस, होशियारपुर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं संस्कृत साहित्य को अवदान

(An Academic Research Paper on the Historical Background of VVRI and its Contributions to Sanskrit & Vedic Literature)

डा. सुमित्रा देवी

शोध सार (Abstract)

'विश्वेश्वरानन्द विश्वबन्धु संस्कृत एवं भारत-भारती अनुशीलन संस्थान' (VVBIS & IS) आधुनिक भारत में संस्कृत, वैदिक वाङ्मय और भारत-विद्या (Indology) के संरक्षण, संपादन, कोश-निर्माण और शोध के क्षेत्र में एक अद्वितीय और युगांतरकारी संस्थान है। बीसवीं शताब्दी के आरंभ में वर्ष 1903 में शिमला की सुरम्य वादियों से शुरू हुई यह ज्ञान-यात्रा लाहौर के शैक्षणिक परिवेश से होते हुए 1947 के देश-विभाजन के भयावह संकट के उपरांत पंजाब के होशियारपुर (साधु आश्रम) में स्थायी रूप से स्थापित हुई। स्वामी विश्वेश्वरानन्द, स्वामी नित्यानन्द और विशेष रूप से संस्थान के मूर्धन्य निदेशक आचार्य विश्वबन्धु के तपस्वी नेतृत्व ने भारतीय शोध परंपरा को पाश्चात्य समीक्षात्मक पाठालोचन (Textual Criticism) और भाषा-वैज्ञानिक पद्धतियों से समन्वित किया।

प्रस्तुत शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य वीवीबीआईएसएण्डआईएस की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, इसके ऐतिहासिक स्थानांतरण, इसके द्वारा निष्पादित विश्वप्रसिद्ध 'वैदिक-पदानुक्रम-कोष' (Vedic Word Concordance), दुर्लभ पाण्डुलिपियों के विशाल संग्रह, विभिन्न ग्रन्थमालाओं (Research Series), शोध-पत्रिकाओं तथा संस्कृत एवं प्राच्य विद्या के पुनरुत्थान में इसके युगांतरकारी योगदान का समग्र, प्रामाणिक और गंभीर अकादमिक मूल्यांकन प्रस्तुत करना है। यह संस्थान पारंपरिक गुरुकुलीय ज्ञान-निष्ठा और आधुनिक विश्वविद्यालयीय वैज्ञानिक अनुसंधान के मध्य एक सुदृढ़ सेतु बनकर उभरा है।

प्रमुख शब्द (Keywords)-

विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान (VVRI), आचार्य विश्वबन्धु, स्वामी विश्वेश्वरानन्द, वैदिक-पदानुक्रम-कोष (Vedic Word Concordance), भारत-विद्या (Indology), पाण्डुलिपि संरक्षण एवं पाठालोचन, साधु आश्रम होशियारपुर, 'विश्वेश्वरानन्द विश्वबन्धु संस्कृत एवं भारत-भारती अनुशीलन संस्थान' (VVBIS & IS)।

1. प्रस्तावना एवं पृष्ठभूमि (Introduction & Background)

भारतीय ज्ञान-परंपरा विश्व की प्राचीनतम और समृद्धतम बौद्धिक धरोहरों में से एक है। इस परंपरा की आधारशिला वैदिक एवं संस्कृत वाङ्मय है, जिसमें दर्शन, अध्यात्म, व्याकरण, काव्यशास्त्र, विज्ञान, खगोल और समाजशास्त्र का अगाध भंडार संचित है। उन्नीसवीं और बीसवीं सदी में जब पाश्चात्य प्राच्यविदों (Orientalists) जैसे मैक्समूलर, अल्ब्रेक्ट वेबर, रूडोल्फ रॉथ, विलियम ड्वाइट व्हिटनी आदि ने भारतीय ग्रंथों का संपादन व अनुवाद अपने दृष्टिकोण से आरंभ किया, तब भारत में यह तीव्र आवश्यकता अनुभव की गई कि भारतीय विद्वत्ता स्वयं अपनी ज्ञान-संपदा का वैज्ञानिक, तुलनात्मक और समीक्षात्मक संपादन-अनुसंधान करे।

इसी युगीन आवश्यकता के प्रत्युत्तर में 'विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान' (VVRI) का प्रादुर्भाव हुआ। इस संस्थान ने न केवल भारतीय मेधा को संपादन और कोश-निर्माण के क्षेत्र में वैश्विक प्रतिष्ठा दिलाई, बल्कि विलुप्त हो रही पाण्डुलिपियों को सुरक्षित कर आधुनिक शोधार्थियों के लिए सुलभ कराया।

2. वीवीआरआई की ऐतिहासिक विकास-यात्रा (Historical Trajectory)

संस्थान का इतिहास त्याग, तपस्या, अटूट निष्ठा और अदम्य साहस की एक अमर गाथा है। इसके विकास को निम्नलिखित चार प्रमुख चरणों में समझा जा सकता है:

(क) प्रारंभिक काल: शिमला एवं इंदौर (1903– 1923)

संस्थान की मूल नींव वर्ष 1903 में शिमला में दो संन्यासियों—स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी और स्वामी नित्यानन्द जी द्वारा रखी गई। दोनों मनीषियों का संकल्प चारों प्रमुख वैदिक संहिताओं का समग्र शब्द-सूचकांक (Word Indices) और एक प्रामाणिक वैदिक शब्दकोश (Lexicon) तैयार करना था। अपने अनथक परिश्रम से 1910 तक उन्होंने ऋग्वेद (शाकल शाखा), यजुर्वेद (माध्यन्दिन शाखा), सामवेद (कौथुम शाखा) और अथर्ववेद (शौनक शाखा) के शब्द-सूचकांक प्रकाशित कर दिए।

1914 में स्वामी नित्यानन्द जी के ब्रह्मलीन होने से कार्य को भारी आघात लगा। स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी ने अकेले ही इस कार्य को 1918 तक शिमला में और 1918 से 1923 तक इंदौर में जारी रखा। अत्यधिक शारीरिक श्रम और साधनों की कमी के कारण जब इस कार्य को आगे बढ़ाना कठिन प्रतीत होने लगा, तब वे 1923 में तत्कालीन संस्कृत और प्राच्य विद्या के प्रमुख केंद्र लाहौर पहुंचे।

(ख) लाहौर काल एवं आचार्य विश्वबन्धु का पदार्पण (1924–1947)

लाहौर में स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी की भेंट एक युवा, प्रखर मेधावी विद्वान आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री जी से हुई, जो उस समय डी.ए.वी. कॉलेज ट्रस्ट एवं प्रबंधकर्त्री समिति द्वारा संचालित 'दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय' के प्राचार्य थे। स्वामी जी ने अपनी जीवन-परियोजना का संपूर्ण उत्तरदायित्व आचार्य विश्वबन्धु के सुदृढ़ कंधों पर सौंप दिया। इसके कुछ ही दिनों बाद स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी महाप्रयाण कर गए।

स्वामी जी की स्मृति को अक्षुण्ण बनाए रखने और उनके अधूरे संकल्प को पूर्ण करने के उद्देश्य से आचार्य विश्वबन्धु ने 1 जनवरी 1924 को लाहौर में विधिवत 'विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान' (VVRI) की स्थापना की। आचार्य जी इसके प्रथम संस्थापक-निदेशक बने और 1 अगस्त 1973 (अपने देहावसान) तक इस पद पर निष्काम भाव से अधिष्ठित रहे। 1934 में डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंध समिति ने अपने प्रसिद्ध 'लालचंद पुस्तकालय' और 'अनुसंधान विभाग' का प्रभार भी आचार्य जी को सौंप दिया। यहाँ पंडित भगवद्दत्त, पंडित भीमदेव शास्त्री, पंडित अमरनाथ शास्त्री, पंडित पीतांबरदत्त शास्त्री और पंडित सूर्यनारायण शास्त्री जैसे प्रख्यात विद्वानों का एक समर्पित दल बना और 'वैदिक-पदानुक्रम-कोष' का कार्य तीव्र गति से आरंभ हुआ।

(ग) 1947 का देश-विभाजन और पाण्डुलिपियों का ऐतिहासिक बचाव

अगस्त 1947 में भारत-विभाजन के समय संस्थान पर अस्तित्व का भीषण संकट आ पड़ा। तत्कालीन पाकिस्तानी प्रशासन ने संस्थान के विशाल संदर्भ पुस्तकालय, दुर्लभ पाण्डुलिपियों, मुद्रित ग्रन्थों और अकादमिक अभिलेखों को भारत ले जाने पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया। इस अत्यंत भयावह और अशांत परिवेश में आचार्य विश्वबन्धु और उनके निष्ठावान सहयोगियों ने अदम्य साहस का परिचय दिया। अपने प्राणों को संकट में डालकर वे संस्थान के अमूल्य पाण्डुलिपि भंडार, मुद्रित सामग्री और शोध-अभिलेखों के एक-एक पृष्ठ को सुरक्षित भारत की सीमा में ले आए। यह घटना विश्व-साहित्य के इतिहास में ज्ञान-संपदा के संरक्षण की सबसे साहसिक घटनाओं में गिनी जाती है।

(घ) साधु आश्रम, होशियारपुर में पुनःस्थापना एवं पंजाब विश्वविद्यालय से संबद्धता

भारत आकर आचार्य जी ने पंजाब के होशियारपुर में स्थित साधु आश्रम में संस्थान को पुनःस्थापित किया, जिसकी भूमि दानवीर श्री धनीराम भल्ला द्वारा दान दी गई थी। नवंबर 1947 से संस्थान ने होशियारपुर में पुन: कार्य आरंभ किया। शिवालिक की पहाड़ियों की तलहटी में स्थित यह शांत परिसर शीघ्र ही अंतर्राष्ट्रीय स्तर का वैदिक और संस्कृत शोध केंद्र बन गया।

1956 में दक्षिण भारतीय लिपियों (मलयालम, तेलुगु, ग्रन्थ आदि) की पाण्डुलिपियों को देवनागरी में लिप्यंतरित करने हेतु पंजाब विश्वविद्यालय के सहयोग से 'देवनागरी लिप्यंतरण विभाग' (Devanagari Transcription Department) आरंभ हुआ। 1959 में स्नातकोत्तर संस्कृत शिक्षण-विभाग प्रारंभ हुआ और इसे पंजाब विश्वविद्यालय से संबद्धता मिली। 1 जुलाई 1965 को संस्थान की दीर्घकालिक स्थिरता के लिए इसके शैक्षणिक एवं शोध विभागों को औपचारिक रूप से पंजाब विश्वविद्यालय ने अपने अधीन ले लिया और इसका नाम 'विश्वेश्वरानन्द इंस्टीट्यूट ऑफ संस्कृत एंड इण्डोलॉजिकल स्टडीज' (VIS&IS) हुआ। 1973 में आचार्य विश्वबन्धु के निधनोपरांत उनके असाधारण योगदान क

प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए इसका नामकरण 'विश्वेश्वरानन्द विश्वबन्धु संस्कृत एवं भारत-भारती अनुशीलन संस्थान' (VVBIS & IS) किया गया।

3. संस्कृत एवं वैदिक साहित्य को मुख्य अवदान (Key Contributions)

वीवीआरआई का अवदान केवल संस्थागत विस्तार तक सीमित नहीं रहा, अपितु इसने संस्कृत वाङ्मय के ऐसे दुरूह क्षेत्रों में कार्य किया जहाँ अत्यधिक बौद्धिक श्रम, सूक्ष्म दृष्टि और धैर्य की आवश्यकता थी।

(क) वैदिक-पदानुक्रम-कोष (Vedic Word Concordance)

वीवीआरआई का सर्वप्रमुख और विश्वविख्यात कार्य 'वैदिक-पदानुक्रम-कोष' है। आचार्य विश्वबन्धु के प्रधान संपादकत्व में 1935 से 1965 के मध्य लगभग तीन दशकों के अखंड पुरुषार्थ से यह 16 विशाल खण्डों (लगभग 11,000 पृष्ठों) में पूर्ण हुआ:

विशाल फलक: इसमें सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय —संहिताओं, ब्राह्मणों, आरण्यकों, उपनिषदों और वेदांग-सूत्रों के 1,25,000 से अधिक मूल शब्दों (Vocables) का व्याकरण-सम्मत, सार्वभौमिक संदर्भ कोष तैयार किया गया।

वैज्ञानिक विश्लेषण: प्रत्येक पद के साथ उसके स्वर (Accent), स्वर-प्रक्रिया (Phonology), व्युत्पत्ति (Etymology), रूप-रचना (Morphology), छन्द, व्याकरणिक कोटि तथा पाठालोचनात्मक टिप्पणियां (Textual criticism) संलग्न की गईं। वैदिक अनुसंधान के लिए यह आज भी पूरे विश्व में अनिवार्य संदर्भ ग्रंथ माना जाता है।

(ख) वैदिक व्याख्या शब्दकोश (Dictionary of Vedic Interpretation)

कोष निर्माण के बाद संस्थान ने 'अ डिक्शनरी ऑफ वैदिक इंटरप्रिटेशन' की महत्वाकांक्षी योजना बनाई। इसमें लगभग 80,000 मूल प्रविष्टियों और 25 लाख पाठ्य संदर्भों के साथ वैदिक पदों के ऐतिहासिक, दार्शनिक और पारंपरिक भाष्यों (यथा सायण, उव्वट, महीधर, स्कन्दस्वामी आदि) का तुलनात्मक संकलन व अर्थ-निर्धारण किया गया।

(ग) पाण्डुलिपि संरक्षण एवं अनुसंधान

संस्थान का पुस्तकालय ज्ञान का अक्षय भंडार है। यहाँ 12,000 से अधिक दुर्लभ पाण्डुलिपियों का विशाल संग्रह है, जिसमें 400 से अधिक अत्यंत प्राचीन वैदिक पाण्डुलिपियां सम्मिलित हैं। ये पाण्डुलिपियां भूर्जपत्र, ताड़पत्र और हस्तनिर्मित कागजों पर शारदा, नेवारी, नन्दिनागरी, ग्रन्थ, मलयालम, तेलुगु और मैथिली जैसी विभिन्न भारतीय लिपियों में संरक्षित हैं। संस्थान द्वारा प्रकाशित Descriptive Catalogue of Manuscripts ने विश्वभर के शोधार्थियों के लिए इन अप्रकाशित ग्रन्थों के द्वार खोले।

(घ) प्रमुख शोध पत्रिकाएं एवं ग्रन्थमालाएं-

1.पत्रिका-विश्वेश्वरानन्द इण्डोलॉजिकल जर्नल (VIJ)

प्रकाशन प्रारंभ वर्ष -1963

भाषा- अंग्रेज़ी, संस्कृत, हिन्दी

उद्देश्य एवं विषय-वस्तु- वेद, भाषाविज्ञान, दर्शन, पुरातत्व और समीक्षात्मक शोध-आलेखों की अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका।

2. पत्रिका - विश्व-संस्कृतम् (Vishva-Samskritam)

प्रकाशन प्रारंभ वर्ष-1963

भाषा- संस्कृत

उद्देश्य एवं विषय-वस्तु- समकालीन संस्कृत लेखन, मौलिक शोध निबंध और शास्त्रीय विमर्श को समर्पित त्रैमासिक पत्रिका।

3. पत्रिका - विश्व-ज्योति (Vishva-Jyoti)

प्रकाशन प्रारंभ वर्ष- 1952

भाषा- हिन्दी

उद्देश्य एवं विषय-वस्तु - भारतीय संस्कृति, वैदिक जीवन-मूल्य, दर्शन और सामाजिक-नैतिक चेतना का प्रसार।

4. पत्रिका - विश्व-साहित्य (Vishva-Sahitya)

प्रकाशन प्रारंभ वर्ष- 1959

भाषा- बहुभाषी

उद्देश्य एवं विषय-वस्तु- सांस्कृतिक समन्वय और तुलनात्मक साहित्य पर केंद्रित मासिक पत्रिका।

4. समीक्षात्मक मूल्यांकन एवं समकालीन प्रासंगिकता (Critical Assessment)

वीवीआरआई के अवदान का मूल्यांकन करते हुए प्रसिद्ध प्राच्यविद् प्रो. वी. राघवन ने यथार्थ ही लिखा था कि "स्वामी विश्वेश्वरानन्द और आचार्य विश्वबन्धु ने वैदिक अध्ययन के क्षेत्र में वही ऐतिहासिक कार्य किया, जो भंडारकर प्राच्य शोध संस्थान (BORI, पुणे) ने क्लासिकल संस्कृत एवं महाभारत के संपादन में किया था।"

संस्थान ने जहाँ एक ओर आर्य समाज की वेदोन्मुखी निष्ठा को संजोए रखा, वहीं दूसरी ओर संपादन और अनुसंधान में कभी संकीर्णता नहीं आने दी। इसने आधुनिक जर्मन और ब्रिटिश प्राच्यविदों की भाषावैज्ञानिक एवं पाठालोचनात्मक पद्धतियों को पूर्ण सम्मान के साथ अपनाया। प्रो. सुनीति कुमार चटर्जी, प्रो. आर. एन. दांडेकर, ए. बी. कीथ जैसे देश-विदेश के प्रख्यात भाषाविदों और विद्वानों ने वीवीआरआई के शोध की गुणवत्ता की मुक्तकंठ से सराहना की।

5. निष्कर्ष (Conclusion)

'विश्वेश्वरानन्द विश्वबन्धु संस्कृत एवं भारत-भारती अनुशीलन संस्थान' (VVBIS & IS) भारतीय बौद्धिक पुनर्जागरण का एक ऐसा अद्वितीय तीर्थ है, जिसने बीसवीं शताब्दी में विखंडित और लुप्तप्राय हो रहे संस्कृत एवं वैदिक वाङ्मय को न केवल बचाया, अपितु उसे आधुनिक वैज्ञानिक शोध-पद्धति से अलंकृत कर वैश्विक पटल पर सर्वोच्च स्थान दिलाया।

शिमला के एक छोटे से संकल्प से आरंभ होकर, लाहौर के संकटों को पार करते हुए, साधु आश्रम होशियारपुर की पावन भूमि पर विकसित यह संस्थान भारतीय मनीषा के अदम्य जिजीविषा और ज्ञान-निष्ठा का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इसका 16 खण्डों में प्रकाशित 'वैदिक-पदानुक्रम-कोष', पाण्डुलिपियों का विपुल संग्रह, आलोचनात्मक संस्करण और शोध पत्रिकाएं संस्कृत साहित्य की अमूल्य थाती हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची (Bibliography)

1.आचार्य विश्वबन्धु (मुख्य संपादक), वैदिक-पदानुक्रम-कोषः (16 खण्ड), विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, साधु आश्रम, होशियारपुर, 1935–1965.

2.कश्यप, आर. एल. एवं स्वामी विश्वेश्वरानन्द (संपा.), अथर्ववेदः (शौनक-संहिता), 4 खण्ड, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर, 1960– 1964.

3.झा, प्रो. दामोदर (मुख्य संपादक), Descriptive Catalogue of Manuscripts in the VVBISIS, पंजाब विश्वविद्यालय, होशियारपुर, 1999.

4.दांडेकर, आर. एन., "Trends in Vedic Studies in India", Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute, खण्ड 48, 1967, पृ. 1– 15.

5.शर्मा, जगदेव, स्वामी विश्वेश्वरानन्दः जीवन और कार्य, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर, 1971.

6.राघवन, वी., "Swami Vishveshvaranand and Vedic Studies", Vishveshvaranand Indological Journal, खण्ड 5(2), 1967, पृ. 1– 8.

7.गुप्ता, एस. पी., "Manuscript Wealth of VVRI", Vishveshvaranand Indological Journal, खण्ड 20(1), 1982, पृ. 45– 60.

8.गोण्डा, यान (Gonda, Jan), Vedic Literature: Saṃhitā s, Brā hmaṇ as, Ā raṇ yakas, ऑटो हैरासोविट्ज़, विसबैडेन, 1975.

9.वीवीआरआई रजत जयन्ती ग्रन्थ, Vishveshvaranand Vedic Research Institute: Silver Jubilee Volume, साधु आश्रम, होशियारपुर, 1949.